कर्मनाशा की हार -- शिवप्रसाद सिंह

कर्मनाशा की हार - कहानी की समीक्षा

कर्मनाशा की हार शिवप्रसाद सिंह द्वारा रचित एक चरित्र प्रधान सामाजिक कहानी है। उन्होंने इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास का विरोध किया है। प्रस्तुत कहानी की समीक्षा इस प्रकार है

कथानक/कथावस्तु/सारांश :-

'कर्मनाशा की हार एक चरित्र प्रधान कहानी है। इस कहानी में एक ब्राह्मण युवक कुलदीप अपने घर के समीप रहने वाली मल्लाह परिवार की विधवा फुलमत से प्रेम करने लगता है। परिवार के सदस्य उसे स्वीकार नहीं करते तथा अपने बड़े भाई मेरो पाण्डे की डाँट से घबराकर कुलदीप घर छोड़कर भाग जाता है। फुलमत एक बच्चे को जन्म देती है। तभी कर्मनाशा नदी में बाढ़ आ जाती है, जिसे लोग फुलमत के पाप का परिणाम मानकर उसे और उसके बच्चे को नदी में फेंककर बलि देना चाहते हैं, जिससे नदी में आई बाद समाप्त हो इसका विरोध करते हुए प्रगतिशील भैरो पाण्डे उसे अपनी कुलवधू के रूप में स्वीकार करके गाँव वालों का मुँह बन्द कर देते हैं।

पात्र और चरित्र-चित्रण :-

प्रस्तुत कहानी में मुख्य पात्र भैरो पाण्डे हैं। भैरो पाण्डे को ही कहानी का नायक भी कहा जा सकता है। इनका चरित्र चित्रण बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है। प्रारम्भ में वे लोक-लाज से

आतंकित हैं, लेकिन शीघ्र ही उनमें मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्फुटित होता है। इसके अतिरिक्त अन्य उल्लेखनीय पात्रों में कुलदीप एवं फुलमत हैं।

कथोपकथन या संवाद :-

इस कहानी की संवाद योजना में नाटकीयता के साथ-साथ सजीवता तथा स्वाभाविकता के गुण भी मौजूद हैं। संवाद, पात्रों के चरित्र उद्घाटन में सहायक हुए हैं, जिससे पात्रों की मनोवृत्तियों का उद्घाटन हुआ है। वे संक्षिप्त, रोचक, गतिशील, सरस और पात्रानुकूल हैं।

देशकाल और वातावरण :-

'कर्मनाशा की हार' एक आँचलिक कहानी है। इस कहानी में स्वाभाविकता लाने के उद्देश्य से वातावरण की सृष्टि की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। एक कुशल शिल्पी की तरह कथाकार ने देशकाल और वातावरण का चित्रण किया है। लेखक ने कर्मनाशा की बाढ़ का चित्र ऐसा खींचा है, जैसे पाठक किनारे पर खड़ा होकर बाढ़ का भीषण दृश्य देख रहा हो।

भाषा-शैली :-

भाषा में ग्रामीण शब्दावली मानुष, डीह, तिताई, दस, बिटवा, चौरा आदि का प्रयोग किया गया है। मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग और उर्दू शब्दों; जैसे- हौसला, सैलाब आदि का प्रयोग है |

इस कहानी में फ्लैशबैक की पद्धति का प्रयोग करके लेखक ने घटनाओं की तारतम्यता को कुशलता से जोड़ा है।

उद्देश्य :-

उपेक्षिता के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त करना तथा उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देना इस कहानी का एक मुख्य उद्देश्य है। इसमें शोषित वर्ग की आवाज को बुलन्द किया गया है। यह कहानी प्रगतिशीलता एवं मानवतावाद का समर्थन करती है। इसमें अन्धविश्वासों को खण्डित किया गया है तथा वैयक्तिक व सामाजिक सभी प्रकार के स्तरों पर होने वाले शोषण का विरोध किया गया है।

शीर्षक :-

'कर्मनाशा नदी' को इस कहानी में अन्धकार निरर्थक तथा रूढ़ि के प्रतीक के रूप में चित्रित कर कहानीकार ने अपनी लेखनी का सफल सामंजस्य किया है। अन्त में कर्मनाशा नदी को नर बलि का न मिलना उसकी हार तथा मानवता की विजय को प्रदर्शित करता है। अतः 'कर्मनाशा की हार' शीर्षक सार्थक बन पड़ा है।

भैरो पाण्डे का चरित्र चित्रण

शिवप्रसाद सिंह द्वारा रचित कहानी 'कर्मनाशा की हार' के मुख्य पात्र भैरो पाण्डे का प्रगतिशील एवं निर्भीक चरित्र रूढ़िवादी समाज को फटकारते हुए सत्य को स्वीकार करने की भावना को

बल प्रदान करता है। भैरो पाण्डे के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं

कर्त्तव्यनिष्ठा एवं आदर्शवादिता :--

भैरो पाण्डे पुरानी पीढ़ी के आदर्शवादी व्यक्ति हैं, जो अपने भाई को पुत्र की भाँति पालते तथा पंगु होते हुए भी स्वयं परिश्रम करके अपने भाई की देखभाल में कोई कमी नहीं होने देते।

विचारशीलता :-

भैरो पाण्डे एक सच्चरित्र, गम्भीर एवं विचारशील व्यक्तित्व से सम्पन्न हैं। वे गाँव के सभी लोगों की वास्तविकता से परिचित हैं, लेकिन किसी के राज़ को कभी उजागर नहीं करते हैं। वे तथ्यों का बौद्धिक एवं तार्किक विश्लेषण करते हैं।

भ्रातृत्व - प्रेम :-

भैरो पाण्डे को अपने छोटे भाई से अत्यधिक प्रेम है। उन्होंने पुत्र के समान अपने भाई का पालन-पोषण किया है। इसीलिए कुलदीप के घर से भाग जाने पर पाण्डे दुःख के सागर में डूबने-उतराने लगता है।

मर्यादावादी और मानवतावादी :-

प्रारम्भ में भैरो पाण्डे अपनी मर्यादावादी भावनाओं के कारण फुलमत को अपने परिवार का सदस्य नहीं बना पाते हैं, लेकिन मानवतावादी भावना से प्रेरित होकर वे फुलमत एवं उसके बच्चे

की कर्मनाशा नदी में बलि देने का कड़ा विरोध करते तथा उसे अपने परिवार का सदस्य स्वीकार करते हैं।

प्रगतिशीलता :--

भैरो पाण्डे के विचार अत्यन्त प्रगतिशील हैं। वे अन्धविश्वासों का खण्डन एवं रूढ़िवादिता का विरोध करने को तत्पर रहते हैं। वे कर्मनाशा की बाढ़ को रोकने के लिए निर्दोष प्राणियों की बलि दिए जाने सम्बन्धी अन्धविश्वास का विरोध करते हैं।

निर्भीकता एवं साहसीपन :-

भैरो पाण्डे के व्यक्तित्व में निर्भीकता एवं साहसीपन के गुण निहित (समाए) हैं। वह मुखिया सहित गाँव के सभी लोगों के सामने अत्यन्त ही निडरता के साथ कर्मनाशा को मानव - बलि दिए जाने का विरोध करता है। वह साहस से कहते हैं कि यदि लोगों के पापों का हिसाब देने लगूँ तो यहाँ उपस्थित सभी लोगों को कर्मनाशा की धारा में समाना होगा।